मैं मर गया

(काव्य-संग्रह)

•

डॉ. रमेश टण्डन

सर्वप्रिय प्रकाशन

दिल्ली-रायपुर

मैं मर गया

(काव्य-संग्रह)

ISBN- 978-93-

●

प्रकाशक

सर्वप्रिय प्रकाशन

1569, प्रथम मंजिल, चर्च रोड,

कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

मो. 94253-58748

e-mail : sarvapriyaprakashan@gmail.com

आवरण सज्जा : कन्हैया

प्रथम संस्करण : 2025

मूल्य : 100.00

सर्वाधिकार : लेखकाधीन

●

Published by

Sarvpriya Prakashan

1569, First Floor Church Road,

Kashmiri Gate, Delhi-110006

Raipur Office

Vaibhav Prakashan

P.S.City Road, Gali No. 5

Shyam Chowk, New Changorabhatha,

Raipur, Chhattisgarh - 492013

First Edition : 2025

Price : Rs.100.00

समर्पण

जिन्होंने सताया मुझे पल–पल
सँवारा मेरा कल – आज–कल
समर्पित कर दूँ क्या यह संग्रह?

होते मुझसे गदगद, भाव–विव्हल
अश्रू बहाते, होते विकट विकल
समर्पित कर दूँ क्या यह संग्रह?

दूजा न कोई प्रिय संसार सकल
खोजे मुझे चहुँ ओर गेह निकल
समर्पित कर दूँ क्या यह संग्रह?

संग चलने को जो तत्पर अविरल
चाहे स्थिति विषम हो या सरल
समर्पित कर दूँ क्या यह संग्रह?

भूमिका

यह कृति मात्र उनतीस दिनों में श्री रमेश टंडन के द्वारा लिखी है। कृति "मैं मर गया" केवल कविताओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह लेखक की आत्मा, स्मृतियों और जीवन–संघर्ष का दस्तावेज है। इसमें जीवन और मृत्यु के बीच संतुलन, सामाजिक विसंगतियों, आत्मस्वीकृति, पारिवारिक संबंधों की जटिलता और मनुष्य की भावनात्मक यात्रा को बड़ी संवेदनशीलता से अभिव्यक्त किया गया है। यह पुस्तक पढ़ते समय पाठक को लगता है कि वह लेखक की निजी डायरी में झाँक रहा है, जहाँ हर पन्ने पर जीवन की गहरी पीड़ा, सपनों के टूटने की आवाज, और फिर भी उम्मीद की लौ जलाने का साहस मौजूद है।

कथ्य और भावभूमि

इस पुस्तक का शीर्षक "मैं मर गया" पहली नजर में मृत्यु का प्रतीक लगता है, लेकिन वास्तव में यह मृत्यु का उत्सव नहीं, बल्कि एक गहन आत्मबोध की यात्रा है। लेखक यहाँ 'मृत्यु' को केवल शारीरिक अंत नहीं मानते, बल्कि सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक परतों में बँटे हुए जीवन से परे उठने की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं।

कृति में कविताएँ, संस्मरण और आत्मकथात्मक नोट्स हैं। लेखक ने अपने संघर्षमय जीवन, परिवार, रिश्तों, व्यक्तिगत सपनों और समाज की कड़वी हकीकत को बहुत ही सहज भाषा में व्यक्त किया है। कई जगह उनकी लेखनी में दुख का मौन, स्मृतियों की आंच और संवेदनाओं की जटिलता महसूस होती है।

रमेश टंडन की लेखनी में भावनाएँ अत्यंत गहराई से अभिव्यक्त हुई हैं। कविताओं में लेखक की दृष्टि केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि

सामाजिक भी है। वे अपने जीवन के संघर्षों, अभावों, रिश्तों की टूटन, और समाज में व्याप्त असमानताओं को व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से पाठक के सामने रखते हैं।

उदाहरण के लिए, उनकी कविताओं में अक्सर "मृत्यु" का उल्लेख आता है, पर यह मृत्यु निराशा का संकेत नहीं है। लेखक मृत्यु को नए जन्म की संभावना और आत्ममुक्ति का प्रतीक मानते हैं। इस दृष्टिकोण से वे पाठक को यह संदेश देते हैं कि जीवन का अंत भी एक नई शुरुआत हो सकती है।

भाषा और शिल्प

इस पुस्तक की सबसे बड़ी खूबी इसकी सरल, आत्मीय और अभिव्यक्तिपूर्ण भाषा है। लेखक ने कठिन दार्शनिक विचारों को भी सहज शब्दों में प्रस्तुत किया है। कविताओं में कहीं भावनाओं की लहर है, तो कहीं जीवन की कठोर सच्चाई।

बिंब और प्रतीकः "अधूरी इच्छाएँ", "अधखिले फूल", "टूटे सपने" और "खामोशी की आवाज" जैसे रूपक कविताओं में बार–बार उभरते हैं।

भावनात्मक संरचना : रचनाओं में भावनाओं की तीव्रता और आत्ममंथन का गहरा संतुलन है।

पुस्तक की कविताओं में गीतात्मकता है। कुछ कविताएँ पूरी तरह आत्मकथात्मक हैं, जबकि कुछ में समाज की व्यथा, टूटते रिश्ते, और पारिवारिक बिखराव का चित्रण है।

जीवन और मृत्यु का बोध

पुस्तक का शीर्षक स्वयं इस कृति की आत्मा है। लेखक जीवन को अस्थायी और मृत्यु को अनिवार्य सत्य के रूप में स्वीकारते हैं। कविताओं में बार–बार मृत्यु का उल्लेख आता है, लेकिन इसमें भय नहीं, बल्कि आत्मबोध है। मृत्यु को जीवन के नए आयाम के रूप में प्रस्तुत करना इस पुस्तक का दार्शनिक पक्ष है।

पारिवारिक स्मृतियाँ और रिश्तों की संवेदनाएँ

पुस्तक का बड़ा हिस्सा लेखक के परिवार, माता–पिता, भाई–बहनों और जीवनसाथी से जुड़ी स्मृतियों पर आधारित है। माँ की ममता, पिता की छाया, बच्चों की मासूमियत और रिश्तों की टूटन सभी भावनाएँ यहाँ उभरती हैं। लेखक ने बचपन की यादों, स्कूल के दिनों और माता–पिता के संघर्षों को अत्यंत संवेदनशीलता से चित्रित किया है।

सामाजिक विसंगतियाँ और संघर्ष

पुस्तक में समाज की असमानताओं, अन्याय और मूल्यहीनता का चित्रण भी मिलता है। बेरोजगारी, आर्थिक तंगी, जातीय विभाजन और नैतिक पतन की पीड़ा कविताओं में स्पष्ट दिखाई देती है। लेखक स्वयं निम्न–मध्यवर्गीय जीवन की कठिनाइयों से जूझते रहे हैं, इसलिए उनकी रचनाएँ पाठक के अनुभवों से गहराई से जुड़ती हैं।

आत्मस्वीकृति और आध्यात्मिकता

कविताओं में आत्मस्वीकृति का स्वर स्पष्ट सुनाई देता है। लेखक जीवन की सीमाओं, अपनी असफलताओं और पीड़ाओं को पूरी ईमानदारी से स्वीकार करते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से वे मानते हैं कि मृत्यु के बाद भी आत्मा की यात्रा जारी रहती है। यह विचार पुस्तक को केवल व्यक्तिगत काव्य नहीं, बल्कि दार्शनिक साहित्य के स्तर पर ले जाता है।

पुस्तक की विशेषताएँ

1. आत्मकथात्मकता : लेखक ने अपने जीवन के अनुभवों को बेझिझक और ईमानदारी से प्रस्तुत किया है।

2. भावनात्मक गहनता : हर कविता, हर संस्मरण में भावनाओं की तीव्रता दिखाई देती है।

3. विविध शिल्प : कविता, संस्मरण, आत्मकथात्मक लेख और

गद्य–काव्य का मिश्रण पुस्तक को रोचक बनाता है।

4. सामाजिक सरोकार : व्यक्तिगत पीड़ा के साथ–साथ सामाजिक चेतना भी इस कृति की विशेषता है।

5. दर्शन और आत्ममंथन : मृत्यु, जीवन, अस्तित्व और आत्मा की शाश्वत यात्रा पर गहन चिंतन।

पाठकीय प्रभाव

''मैं मर गया'' पाठक को भीतर तक छू जाती है। इसमें न केवल लेखक का निजी दर्द है, बल्कि उस दर्द के माध्यम से समाज, रिश्ते, और अस्तित्व की खोज भी है।

यह पुस्तक पाठक को जीवन के गहरे प्रश्नों पर सोचने के लिए प्रेरित करती है।

लेखक के शब्द पाठक की संवेदनाओं को झकझोरते हैं, और उसे आत्ममंथन के लिए विवश करते हैं।

निष्कर्ष

रमेश टंडन की "मैं मर गया" एक गहन संवेदनशील और आत्मकथात्मक कृति है। इसमें कविताएँ केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि जीवन के दर्शन का दर्पण हैं। लेखक का यह साहस, कि वे अपनी संवेदनाओं, कमजोरियों, सपनों और संघर्षों को पाठकों के सामने नंगे रूप में रखते हैं, इस पुस्तक को विशिष्ट बनाता है। जो पाठक जीवन, मृत्यु, संवेदना और अस्तित्व के प्रश्नों पर गहराई से विचार करना चाहते हैं, उनके लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी और प्रेरक है। यह केवल साहित्य नहीं, बल्कि जीवन का दस्तावेज है, जो पाठक को भीतर से बदल देता है।

डॉ सुधीर शर्मा
अध्यक्ष, हिंदी एवं पत्रकारिता,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई छत्तीसगढ़

कवि–लेखनी से...

मैं एक चेतना सम्पन्न मानव हूँ। शिक्षित और तर्कशील भी हूँ। इसीलिए मुझे वह सब दिखाई देता है, जो सभी को दिखाई देता है। मैं चिंतन भी कर सकता हूँ, जैसे अन्य लोग कर सकते हैं। मैं निम्न मध्यम वर्ग में जन्म लिया हूँ, जैसे विश्व के अधिकांश लोग जन्म लिए। मैंने गरीबी देखी है, मैंने आजीविका के लिए संघर्ष देखा और किया भी है, जैसे बहुतायत लोग किए। मैंने अध्ययन के दौरान अभाव देखा है, प्रतियोगिता देखी है, बेरोजगारी की समस्या देखी है, परिवार का संगठन देखा है, परिवार का विघटन भी देखा है; जैसे इन सभी को देश की बहुल जनता ने देखा है।

परन्तु, मैं अपने अनुभवों को डरते–डरते लिख लेता हूँ। बाकी लोग जो देखते हैं, उससे या तो डरते हैं, या नहीं डरते हैं, परन्तु लिखते नहीं। मैंने जो कुछ यहाँ लिखा है, वह मेरा अपना होते हुए भी अपना नहीं है। हम सभी का है। मेरे घट के भीतर जो बातें आईं, उन्हें भीतर ही रखता, तो मुझे कुछ भी हो सकता था। मुझे कुछ नहीं होने देने के लिए लेखन का सहारा लिया। जिसने कुछ सहारा नहीं लिया, उसे कुछ हो गया है। क्या हुआ उन्हें, उन्हीं को पता है। परन्तु उन्हें निश्चित तौर पर कुछ हुआ है। कुछ भी हों, बातें हों या पदार्थ हो, अधिक देर तक शरीर के भीतर रहने से जहर बन जाता है। जहर का गुण जहरीला होता है। यह हर किसी को जीने नहीं देता। कुछ लोग जहर के साथ जी लेते हैं। कौन जीते हैं, जो जीते हैं, वही

जानते हैं। मैंने तो कुछ मिनटों में ही किसी पत्र में या किसी मशीन के ऊपर छोड़ कर अपने आप को अवसाद मुक्त कर लिया। अब आपकी बारी है, किसी को सुना दो या कहीं लिख दो और हो जाओ तनाव मुक्त।

किन हालातों में हम जिंदा रहकर भी मृत समान हो जाते हैं? इसका रूपायन आत्मवादी रूप में इस काव्य संग्रह में किया गया है। जब मैंने इसे लिखा, तब यह मेरे लिए था। अब आप पाठक होंगे, तब आपके लिए होगा। मैं में इतनी शक्ति होती है कि उसमें पूरा ब्रम्हाण्ड समा जाता है। संसार का हर पाठक मैं से शुरूआत करके इस काव्य को अपने अनुरूप आत्मसात कर सकते हैं। उन्हें लगेगा कि यह पंक्ति हमारे लिए ही है। जब लोक हित या स्वार्थ में मैं की तृप्ति नहीं होती, तब हमारा वजूद समाप्तप्राय प्रतीत होता है। इन परिस्थितियों में आत्म स्वाभिमान हताहत होता है। यह स्थिति समाज के प्रति उत्तरदायी हर वर्ग की होती है। वह माँ, पत्नी, बेटी हो सकती है; पिता, पति, पुत्र हो सकता है। हृदय की गहरी संवेदनाएँ, भावनाएँ भी हो सकती हैं। यह भावनाएँ विभिन्न कारणों से चोटिल होती हैं। कुछ कर्मप्रधान चरित्र भी इसके दायरे में आते हैं। मैं तो कहूँगा, हर चरित्र कभी अपनों के कारण, कभी व्यवस्था के कारण गुम होता जा रहा है। इसे बचाने का उद्यम हमें करना होगा, अन्यथा भविष्य संवेदना रहित और रिश्ते भावनाविहीन हो जाएंगे। कर्म, अकर्मण्य का रूप धारण कर लेगा, लोग पतित हो जाएंगे, जमीन जर्जर हो जाएगी, देश गुलाम हो जाएगा। हम मर जाएंगे।

पहले काव्य संग्रह में घनीभूत 'पीड़ा' का परिपाक हुआ है। सन् 2014 में प्रियंका पब्लिसिंग हाऊस जयपुर से प्रकाशित काव्य संग्रह 'पीड़ा' में 24 प्रकार की पीड़ा समाहित है। पहचान

की पीड़ा, पद की पीड़ा, पैसे की पीड़ा, परिधान की पीड़ा, पेपर की पीड़ा, पीड़ा, प्रकृति की पीड़ा, प्रलय की पीड़ा, पेड़ की पीड़ा, पवन की पीड़ा, पुष्प की पीड़ा, परिवहन की पीड़ा, पशु की पीड़ा, प्रभात की पीड़ा, परमेश्वर की पीड़ा, पुरुषार्थ की पीड़ा, परीक्षा की पीड़ा, प्रांत की पीड़ा, प्रजा की पीड़ा, प्रधान की पीड़ा, पायल की पीड़ा, प्रेम की पीड़ा, प्रसाद की पीड़ा और अंत में परम पीड़ा, सभी में मानवीकरण के सहारे मेरे भीतर की पीड़ा को रेखांकित किया गया है।

इस द्वितीय काव्य संग्रह में मरने से पहले हम क्या कर सकते हैं ? अपने जीवन को किस तरह सुंदर और सार्थक कर सकते हैं ? उसकी परिकल्पना को खुद की कल्पना से जोड़कर शब्दाकार दिया गया है। देश की रक्षा में, प्रकृति के संरक्षण—संवर्द्धन में, मानवता के पालन में, अवसाद मुक्त जीवन जीने में हमारी भूमिका को रेखांकित करते हुए व्यक्तिगत कार्य और इच्छा को व्यष्टि से समष्टि में परिणित किया गया है। मरने के बाद की स्थिति को भी स्पष्ट रूप से इसी तरह आकार प्रदान किया गया है। वास्तविक रूप मे, मेरे स्वयं के जाने के बाद, यह काव्य संग्रह मेरी निजी वसीयत होगा, संपत्ति आदि को लेकर नहीं। यही एक—दो किताबें ही मेरी संपत्ति है, जिसे मेरे परिवार के लोग बारी—बारी से बाँटेंगे। इसे छात्र भी, पाठक भी ले सकेंगे। देश भी, समाज भी ले सकेगा।

'मरने से पहले' की मेरी इच्छाएँ व कार्य, 'मैं मर गया' की युगीन परिस्थितियाँ और 'मेरे मरने के बाद' की मेरी इच्छाएँ व वसीयत इस काव्य संग्रह में संग्रहित हैं। यदि ये देश काल वातावरण से मेल न खाएँ, तो अपने हिसाब से अर्थ ग्रहण कर लें। यह कवि के स्वयं की है, मान लिया जाए। यदि आपकी भी

यही इच्छा, कर्म और वसीयतनामा हो तो आत्मसात करते हुए क्रमशः अगली पीढ़ी को पहुँचाने के अनुरोध के साथ अगली पीढ़ी को पहुँचाएँ।

अंत में, अपने परिवार के प्रति अपनी भावना व्यक्त करता हूँ। पूज्य पिता जी श्री कौशल प्रसाद टण्डन से आशीर्वाद लेकर, माता जी सतलोकी श्रीमती फूलकुँवर टण्डन से सूक्ष्माशीष लेते हुए, जीवनसंगिनी श्रीमती पूर्णिमा टण्डन एवं पुत्र–पुत्रियों – हेमलता, देवला, डिम्पल, दोलिका, सानिध्य को शुभाशाीष प्रदान करता हूँ। दामांद श्री वीरेन्द्र अजय, श्री उपेन्द्र नाथ भारद्वाज को आशीष है। सास–ससूर श्रीमती बिसाहीन कुर्रे, श्री फूलसाय कुर्रे जी को प्रणाम करता हूँ। नाती श्री कियांश को स्नेहाशीष प्रदान करता हूँ।

यदि इस काव्य–संग्रह से परिवार के कोई व्यक्ति, रिश्तेदार, परिचित, अन्य व्यक्ति, जन–समूह या विशेष जाति–धर्म–सम्प्रदाय के लोगों की भावना आहत हो जाए, तो उनसे क्षमा माँगता हूँ।

प्रथम पुत्री अवतरण दिवस
(दिनांक 21 अगस्त)

(डॉ. रमेश टण्डन)

पापा के बारे में...

जब मैं 16 वर्ष की हुई, तब काफी समझदार हो गई थी और दसवीं कक्षा को 85 प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण हुई थी। सभी अच्छी–बुरी बातें समझती थी और तर्क भी कर सकती थी। उस समय मेरे दादा ने पापा के बारे में बहुत–सी बातें बताई थीं, जो मुझे अच्छे–से याद है।

जब पापा छोटे थे, संकोची स्वभाव के थे; परन्तु पढ़ाई में होशियार थे। चौथी कक्षा पढ़ते हुए जब विद्यालय में तीसरी कक्षा के शिक्षक श्री कन्हैया चरण पटेल ने इन्हें पेज खाने की छुट्टी के समय घंटी मारने के लिए कहा, तो इनसे घंटी बजाना नहीं आया था। उस दिन प्रथम बार शिक्षक ने पीछे से घंटी पीटने के घुमावदार लकड़ी से धीरे–से प्यार से पीटा था। पापा ऊं ऽऽऽ बोल के खिसक लिए थे।

गृह ग्राम फूलबंधिया में प्राथमिक शाला के अध्ययन के दौरान पहली से तीसरी कक्षा की पढ़ाई श्री चितलाल सिदार के आंट (सड़क तरफ के बरामदे में) तथा कक्षा चौथी और पाँचवी कक्षा की पढ़ाई श्री मुरलीधर वैष्णव के आंट में सम्पन्न हुई। इस बीच कई बार सामने के खलिहान में पेड़ के नीचे, नाली के ऊपर, यूरिया खाद के खाली बोरे को जमीन पर बिछाकर पढ़ाई हुई। उन दिनों शिक्षक के कक्षा में प्रवेश करने पर सभी छात्र खड़े होकर ''गुरूजी को घेरकर खड़े हो जाओ जय हिन सर'' कहते थे। चौथी–पाँचवी कक्षा के दौरान नजदीकी ग्राम आमापाली निवासी श्री सियाराम डनसेना गुरूजी अपनी लकड़ी की कुर्सी

पर बैठकर पढ़ाते थे, उनके सामने खड़े होकर घेरकर पापा सहित इनके दोस्त लोग पढ़ते थे। कक्षा पाँचवीं में पापा के साथ कुल छह लोग पढ़ते थे। पापा होशियार थे, इसलिए प्रार्थना के समय सामने खड़े होकर बाकी छात्रों को प्रार्थना संबंधी निर्देश देते थे। प्रार्थना के समय शिक्षक सभी छात्रों के नाखून और दांत चेक करते थे। पापा का चेक नहीं करते थे, क्योंकि ये मुखिया थे और होशियार थे। यह बात अलग थी कि पापा भी रोज ब्रश नहीं करते थे।

दादा जी ने आगे बताया कि मेरे पापा जब माध्यमिक शाला सोण्डका में प्रवेश लिए, तब पहले से मेरे बड़े पापा एक कक्षा आगे में पढ़ते थे। उनका फायदा पापा को मिला। कोई कुछ नहीं बालता था। पापा पैदल बिना चप्पल के तीन किलोमीटर जाते थे। बिना टिफिन किए शाम को रास्ते में लगे अरहर को चोरी छिपके खाते आते थे। घर आने के बाद दोपहर का बचा ठंडा खाना खाते थे। कई बार दादी बाहर खेतों में काम करती थी, तब पापा लोग दोनों भाई रात का खाना बनाते थे। आठवीं कक्षा में विद्यालय में प्रथम स्थान एवं श्रेणी भी प्रथम आने पर राष्ट्रीय ग्रामीण प्रतिभावान खोज परीक्षा में पापा शामिल हुए। पहली बार जिला रायगढ़ गए। वहाँ भी प्रथम आए। फिर 12वीं तक अलग से छात्रवृत्ति मिली।

पापा आकाशवाणी से रोज शाम को युगवाणी सुना करते थे। आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद, युगवाणी से सुनकर कुछ प्रश्नों के उत्तर लिखकर आकाशवाणी केन्द्र भोपाल भेजे थे। वहाँ से इन्हें तीन साइंस की किताबें डाक से पुरस्कार स्परूप प्राप्त हुई थी। पुरस्कार पाकर पापा बहुत खुश हुए थे। पोस्टमास्टर इन्हें पूछे भी थे कि कैसे में ये आपको मिले? गर्मी माह में एक

बार पापा और पड़ोस में रहनेवाले इनके दो संगवारी गाँव के समीप नाले के उस पार खैरपाली गाँव के खेत में लगी फसल मूंगफली को खाने गए। सरल भाषा में चोरी करना कह सकते हैं। उसी समय खेत का मालिक आ धमका। पापा थोड़ा बड़े थे, उन दोनों को वहीं छोड़कर भाग गए। उन दोनों को खेत मालिक पकड़ लिया और अपने गाँव ले गया। बाद में पापा को भी घर में डाँट पड़ी। पापा ने दुबारा ऐसी गलती नहीं करने की जुबान दी। परन्तु जुबान तो अच्छे–अच्छे की खिसक जाती है। हाई स्कूल पढ़ने की अवस्था में रात में जब भी मेला घूमने का मौका मिलता था, चलते–चलते, किनारे लगे तखत या खाट में फैलाए हुए जलेबी, लड्डू, सलोनी, नमकीन आदि में से चुपके से एक जलेबी पकड़कर चलते बनते थे, किसी को पता भी नहीं चलता था। यह आदत नौकरी मिलने के बाद चली गई।

नवमीं से ग्यारहवीं कक्षा पढ़ने के दौरान, पापा दादा जी के बीड़ी बनाने संबंधी कार्य में हाथ बटाते थे। सुबह पान काट देते थे। फिर विद्यालय से घर आने के बाद बचे हुए पत्ते से कुछ बीड़ी बना देते थे। रविवार को और गर्मी की छुट्टियों में दिन भर पूरा परिवार बीड़ी बनाने के काम में लग जाता था। इससे अगले साल की पुस्तकें, कापी, शुल्क, शालेय गणवेश आदि का खर्च निकल आता था। चप्पलें दसवीं के बाद नसीब हुई। जूता कॉलेज में मिला, वह भी एनसीसी में भर्ती होने पर।

इस प्रकार, पापा गरीबी में भी हर साल अपनी कक्षा में प्रथम स्थान और श्रेणी भी प्रथम लाते थे। लगातार अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने की खुशी सबसे अधिक दादा जी को होती थी। वे अपनी क्षमता अनुसार पूरा पढ़ाना चाहते थे। जैसे ही बी. एससी गणित प्रारम्भिक (जून 1993) का परिणाम प्रथम श्रेणी में

उत्तीर्ण होने के अंक के साथ आया, कुछ दिनों बाद रोजगार कार्यालय रायगढ़ से शनिवार को एक पत्र पापा के नाम घर पर डाक से आया। वह पत्र 12वीं के आधार पर सहायक शिक्षक भर्ती के संबंध में था। अंतिम तिथि को ही पत्र मिला। पापा उनके मामा गाँव बघौद गए थे। दादा जी उनके प्रमाण पत्रों को लेकर साइकिल से बघौद गए। परन्तु पापा वहाँ भी नहीं मिले, पुरैना होते डभरा चल दिए थे। दोपहर के बाद जैसे ही पापा बघौद वापस आए, दादाजी ने उन्हें चन्द्रपुर के रास्ते बस से रायगढ़ भेजे। शाम पाँच बजे कलेक्टर कार्यालय के सहायक आयुक्त की उस खिड़की पर पहुँचे, जहाँ पहले से कुछ लोग पंक्तिबद्ध थे। जब पापा खिड़की के पास पहुँचे, तब जो बाबू प्रमाण पत्र ले रहा था, कहीं चला गया। उसके स्थान पर एक नया बाबू बैठा। उस नए बाबू ने पहला आवेदन पापा का ही लिया। पापा के पास सभी प्रमाण पत्रों के मूल प्रमाण पत्र नहीं थे, कुछ के थे, कुछ के नहीं थे। उस बाबू ने सभी का मूल प्रमाण पत्र मांगा। परन्तु नए बाबू का फायदा उठाकर पापा ने कहा कि पहले वाले बाबू तो मूल प्रमाण पत्र देख ही नहीं रहे थे। इस प्रकार आवेदन एवं सभी प्रमाण पत्रों की छायाप्रतियाँ आसानी से जमा हो गईं।

फिर क्या था, मात्र 18 वर्ष 06 माह की अवस्था में पापा की सरकारी नौकरी सहायक शिक्षक के रूप में सारंगढ़ क्षेत्र के माध्यमिक शाला अण्डोला में लग गई। एक बार साइकिल से पापा को घर आना था। 60 किलोमीटर की यात्रा में बीच में जोर से भूख लगी। रास्ते में एक बड़ा गाँव कोटमी पड़ा। उस दिन बाजार था। गर्मी का महीना था। पापा ने सोचा कि बड़ा–समोसा खाकर पेट भरने के लिए अधिक पैसे लगेंगे। फिर क्या था दस रूपए के तरबूज ले लिए, वहीं पर पूरा तरबूज खतम।

नौकरी के बाद, 20 वर्ष 05 माह की अवस्था में पापा का विवाह मम्मी से हो गया। बाद में पापा के कॉलेज जीवन की एक महत्त्वपूर्ण डायरी मेरे हाथ लगी। पापा ने नहीं बताया, मम्मी ने नहीं बताया। दादा तो इस बात को जानते ही नही थे। हुआ यूँ कि बी.एससी. प्रथम वर्ष के दौरान पापा सिर्फ एकतालीस दिन अध्ययन से अर्द्धविमुख रहे, आँखें कभी आसमान में झिलमिल सितारों की ओर, तो कभी प्रकृति के मनोरम दृष्यों में उलझ जाया करती थीं। डायरी की एक पंक्ति अभी भी मुझे याद है–
''प्रेम करने वालों का घर बसते मैंने बहुत कम ही देखा है, क्योंकि इस प्रकार की जो चीज है वह ब्रम्ह का लेखा है।''
किराए का मकान कयाघाट से मालीपारा परिवर्तन करने के बाद शिक्षा सत्र 1992–93 की जनवरी–फरवरी में ही पापा ठीक से पढ़ पाए। डायरी में पापा ने रहने, घर किराया, आने–जाने, पुस्तक–कॉपी, कपड़ा, नमक–तेल, लेन–देन सहित कुल एक साल की पढ़ाई का व्यय 3395 रू0 लिखा है। कभी काम पड़ने पर रेलगाड़ी से रायगढ़ से घर आकर उसी दिन वापस रायगढ़ चले जाते थे। इस दौरान रेल्वे स्टेशन राबर्टसन से पाँच किलोमीटर पैदल चलकर घर फूलबंधिया आते थे और शाम को पुनः उतना ही चलकर राबर्टसन जाते थे। एक बार रायगढ़ मकान मालिक की बेटी, जो तीसरी में पढ़ती थी, को साथ में घर लाए। उस दिन राबर्टसन रेल्वे स्टेशन में पापा बिना टिकट की यात्रा करने के कारण पकड़ाए थे। दस रूपए में मामला निपट गया था। वह पापा की मुँहबोली भांजी थी। तब से आज तक कॉलेज की कई छात्राएँ पापा की भांजी बन चुकी हैं। यह सिलसिला चल ही रहा है। दिनांक 09 अगस्त 2025 को एक भांजी की मम्मी जो कि बोतल्दा की पटैल है, पापा को राखी बाँध

ाने घर आई थी। देवरघटा की साहू ने दूसरे दिन राखी बाँधूगी, बोली है। यह एम ए हिन्दी की तत्कालीन छात्रा की मम्मी है। पापा को भांजियों का बहुत शौक है, भाजियों का भी बहुत शौक है– सुनसुनिया भाजी, मुनगा भाजी प्रिय हैं। मुनगा भाजी में करेला भाजी मिलाकर खाते हैं। पापा की बहन नहीं है। परन्तु राखी त्यौहार में दर्जन भर राखी हाथ में बंधी रहती है।

नौकरी के बाद पापा ने बी. ए., एम. ए. (हिन्दी, अंग्रेजी) की पढ़ाई स्वाध्यायी छात्र के रूप में पूरी की। 2006 में पी–एच.डी. भी किए। सीजी सेट की परीक्षा भी उत्तीर्ण किए। 2007 तक बड़ी दी हेमलता, छोटी डिम्पल, दोलिका, सबसे छोटा व अकेला भाई सानिध्य के साथ हम पाँच भाई–बहन हुए। दादा–दादी, परदादी, मम्मी और पापा सहित परिवार में कुल दस सदस्य हुए। हमसे पहले पापा लोग परिवार में पाँच थे – दादा, दादी, परदादी, बड़े पापा और पापा। अब बच्चे ही पाँच हैं।

20 नवम्बर 2012 तक लगभग 19 वर्ष पापा, स्कूल में शिक्षक थे। इस दौरान पापा ने गणित, अंग्रेजी, संस्कृत, विज्ञान, भौतिकी विषय को पढ़ाया। नौकरी के बाद भी पापा ने पढ़ना नहीं छोड़ा। 2009 में छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग से सहायक प्राध्यापक पद का विज्ञापन आया। पापा ने आवेदन कर दिया। जिस दिन परीक्षा होनी थी, वह समय हमारे तत्कालीन परिवार के लिए दुख की घड़ी था। बड़े पापा का धरमजयगढ़–खरसिया रोड में खड़गाँव के पास मोड़ पर एक्सीडेंट हो गया था। इसमें बड़े पापा और उनके एक साथी की ऑन द स्पॉट मृत्यु हो गई। पापा ने सिर पर बालों को मुड़वा लिया था। दशकर्म भी नहीं हो पाया था। इसी बीच बिलासपुर में सहायक प्राध्यापक भर्ती की परीक्षा थी। समय और अवसर की महत्ता को समझते हुए पापा

ने एक रजिस्टर जो कि नोट्स था, को पकड़कर परीक्षा दिलाने बिलासपुर चल दिए, उस समय घर का माहौल पूरा दुखद था, बहुत–से मेहमान भी घर पर थे।

अंततः 28 अक्टूबर 2010 को साक्षात्कार देकर 12 नवम्बर 2012 को पापा महाविद्यालय में हिन्दी विषय के सहायक प्राध्यापक हुए। 21 नवम्बर 2012 से अभी तक शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया में पापा ने एनसीसी अधिकारी, क्रीड़ाधिकारी, नैक समन्वयक, पत्रिका सम्पादक, यूथ स्पार्क नोडल, एसएलसीएम नोडल, सहायक छात्र संघ प्रभारी, प्रभारी प्राचार्य (चालू प्रभार), प्रवेश प्रभारी सहित अन्य महत्त्वपूर्ण दायित्वों को सम्भाला है। खेल के सिलसिले में विश्वविद्यालय बिलासपुर की तरफ से चंडीगढ़ और बीकानेर प्रवास पर भी पापा रहे हैं।

मुझे गर्व है कि पापा मेरे पापा हैं। हमें हँसाते रहते हैं। दोस्त भी हैं, पापा भी हैं। परन्तु यह भी है कि मुझे पूरी तरह याद है, जब भी पापा कॉलेज से घर आते थे तो घर में चल रही टीवी तुरंत बंद हो जाती थी। उस समय हम दोनों बड़ी बहनें हाई स्कूल की कक्षाओं में पढ़ते थे। पापा ने मम्मी से कभी नहीं लड़ा और दादा–दादी से भी कभी ऊँची आवाज में बातें नहीं की। कभी–कभी मुझे पीटते थे, तब मैं वहीं अड़ी रहती थी। मुझे मार खाते देख बड़ी दी भागकर छिप जाती थी और वह मार से हमेशा बच जाती थी।

मेरी इच्छा है कि मैं अपने पापा की तरह बनूँ।

पापा की लाडली,
(देवला टण्डन)

पापा आज भी बड़े व्यापारी जो पक्का बिल नहीं देते, वे यदि पचास–सौ की भूल करते हैं, तो चुप–चाप चलते बनते हैं। जैसे 08 अगस्त 2025 की ही बात है – पापा ने 220 रू0 के सामान लिए। दो सौ के दो नोट दुकानवाले को दिए। उसने 280 वापस किया। वापस लेने के बाद कुछ समय दुकान के बाहर ही खड़े रहे, इस उम्मीद में कि दुकान वाले को भूल याद आए और बुलाकर कुछ कहे। दुकानदार की तरफ देखे भी, परन्तु उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। फिर पापा वहाँ से चल दिए।

पापा की लाडली,
(हेमलता टण्डन)

पापा अधिकांशतः हँसीप्रिय हैं, नरम हैं, कभी–कभी सख्त हैं। 2022 ई0 में जब मैं ओपी जिंदल विश्वविद्यालय रायगढ़ में बी.एससी. ऑनर्स फिजिक्स कर रही थी, पापा मेसेज में एक बार थोड़ा–सा डांटे थे। मैं दो दिन तक थर–थर काँपी थी।

पापा की लाडली,
(डिम्पल टण्डन)

अनुक्रम

1.	मरने से पहले	23
2.	मर गया	38–85
2.1	माँ मर गई	38
2.2	पिता मर गया	42
2.3	मैं मर गया	43
2.4	वह मर गया	54
2.5	बेटा मर गया	56
2.6	पत्नी मर गई	57
2.7	पति मर गया	58
2.8	लोग मर गए	59
2.9	प्रेम मर गया	63
2.10	उम्मीदें मर गईं	66
2.11	लगन मर गई	70
2.12	समय गया	72
2.13	डर मर गया	75
2.14	गुस्सा किया	76
2.15	घमण्ड मर गया	77
2.16	कवि मर गया	79
2.17	किसान मर गया	84
2.18	न्याय मर गया	85
3.	मरने के बाद	86

मरने से पहले

नहीं जाएगी सीमा पर,
किसी निर्दोष की जान।
चाहे आतंक कारगिल में,
या हो पहलगाम।
कम न होने देंगे,
सेना का शार्य मान।
हर हाल में तिरंगा,
फहरेगा आसमान।
चाहे भीषण गर्मी हो,
या शून्य कम तापमान।
नहीं झुकेगी सेना,
डटी रहेगी, सीना तान।
मैं नहीं भर सकता,
सीमा पर उड़ान।
पर, करूँगा हौसला बुलंद,
जब तक है मेरा नाम।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

धरती की क्यारी में,
भरूँ फूलों की लाली,
वन सघन न कटे,
पौधे नित हरियाली।
भौंरे गुनगुनाए गीत,
हर शाखा हर डाली।
प्रकृति का रखवाला बन,
खुशी से झुमूँ, मैं माली।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

सड़क पर न पीक करूँ,
स्वच्छ रखूँ अपना देश।
अपना फर्ज निभाऊँ,
चाहे घर हो या परदेश।
घर सफाई नित करूँ,
कचड़ा करे न प्रवेश।
शरीर साफ पर ध्यान दूँ,
पहनूँ नित साफ वेश।
लोगों को प्रेरित करूँ,
सफाई करें विशेष।
कहीं न हो प्रदूषण,
पहले अपना, फिर शेष।
दूर तन से बीमारी,

मन से दूर क्लेश।
स्वच्छता ही जीवन है,
करे निवेदन रमेश।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

बन कर अपना,
सबका दुख हरना।
हँसाना और हँसना,
यही मुझे है करना।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

वृद्ध बाप का सहारा बनूँ,
माँ की आँखों का तारा बनूँ।
भाई का दुलारा बनूँ,
बहन का भाई राजा बनूँ।
पत्नी का प्यारा बनूँ,
दोस्तों का यारा बनूँ।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

गरीब की मदद करूँ,
तपन का शरद बनूँ।
बूढ़ी माँ की तीरथ बनूँ,

कृषक का नीरद बनूँ।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

तेरी उम्मीदों की आस बनूँ,
दिल के आसपास रहूँ।
जब भी पुकारो मुझे,
तुम्हारे साथ रहूँ।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

दुख में परछाई बनूँ,
पालने अम्मा ताई बनूँ।
हर पल तेरा भाई बनूँ,
अभाव में कमाई बनूँ।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

प्रेम का पथिक बनूँ,
समय का सटीक बनूँ।
जब भी आवाज दो,
तुम्हारे नजदीक रहूँ।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

ललक रखने की चाह सिखाता हूँ,
आगे बढ़ने की राह दिखाता हूँ।
खुद न कर पाऊँ तो क्या ?
तेरे पढ़ने से मैं ही वाह पाता हूँ।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

न अरण्य आच्छादन,
न वनस्पति वर्णन।
करूँ वन्य जीव संरक्षण,
पर्यावरण हरित संवर्द्धन।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

न महल बनाऊँ,
न कारखाना।
रईसों की तरह
न जीने का पैमाना।
अपनों के साथ,
जीवन का खजाना।
सादगी में जीऊँ,
फिर चले जाना।
तू मेरे साथ जैसे
गहरा हो याराना।

करूँ भाईचारे की
बात रोजाना।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

अंदर खोजूँ सुख–शांति,
क्यों भटकू चारों धाम।
सार सबका एक है,
गीता बाइबिल कुरान।
नहीं देश में धर्म जाति,
लहू लोक में समान।
नाम सबका एक है,
ईसा अल्लाह राम।
कर्म करूँ मानवता का,
मानव–मानव एक समान।
एक दिन जाना सबको,
क्यों करूँ अभिमान।
न जपूँ राम नाम,
शंकर गणेश हनुमान।
खुद को करूँ श्रेष्ठ,
जग में बनूँ महान।
सत्य शील शांति अपनाऊँ,
बाह्याडम्बर छोड़ूँ तमाम।
तर्क करूँ, चिंतन करूँ,

शिक्षा का यही है ईनाम।
घमण्ड छोड़ूँ, क्रोध छोड़ूँ,
छोड़ूँ अंदर का शैतान।
प्रेम, करुणा, क्षमा भरूँ,
दिल से बनूँ इंसान।
न हो निरादर कोई,
पाएँ मुझसे सब सम्मान।
प्रेरित करूँ जन–जन को,
बने तर्कशील विचारवान।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

एक आदमी को माँ से मिलने
घर जाना जरूरी है।
एक भी सीट रिक्त नहीं,
बस खचाखच भरी है।
मैंने अपनी सुरक्षित टिकट
उन्हें दूँ।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

एक आदमी को साक्षात्कार में
जाना था, नहीं है पैसे।
किताब के लिए पैसे भेजे मुझे बा ने,

मगर दे दूँ सब उसे।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

मरम्मत के लिए एक गरीब आदमी ने
तोड़ा अपना घर।
मैंने कहा, रह लो पूरा परिवार निःशुल्क
पहले मंजिल पर।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

उसके सारे छोटे बच्चों का देह,
निर्वस्त्र या अर्द्धवस्त्र लिए।
मैंने छद्म जन्म दिन के बहाने,
उन्हें कुछ वस्त्र दिए।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

उनके बच्चों का पेट भूख से
बिलबिला रहा था।
काजू बर्फी से हमारा मुख,
खिलखिला रहा था।
उनके भी पेट
मैंने भरे।

क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

बात उद्यमिता की हो,
या परीक्षा नेट यूजीसी।
कल पर कभी न टालें,
करें तैयारी शुरू अभी।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

आपने जो बनाई विधि,
वह थी आपके अनुसार।
चाहा जैसा अपने लिए,
बनाया ट्रिक प्रकार।
मेरे मस्तिष्क की क्षमता,
नहीं होगी आपके बराबर।
या कम विकसित होगी,
या होगी आपसे बेहतर।
अपने लिए बनाई ट्रिक,
हम पर न प्रयोग करो।
न थोपो, अपनी बुद्धि,
यह करके सहयोग करो।
भेड़–बकरी नहीं हैं हम,
कि एक लाठी–सूत्र पर।

मार्गदर्शित हो जाएँ पूरा,
और बन जाए करियर।
समझ मेरी, मस्तिष्क मेरा,
बेहतर है मेरी सोच।
मैं बनाऊँ खुद का ट्रिक,
मै हूँ खुद मेरा कोच।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

मेरे प्यारे बेटे, बेटी, पोता, नाती!
नियमित पढ़ाई के बाद करो शादी।
एक अवस्था के बाद संभव नहीं शादी,
इच्छा मर जाती है बढ़ाने की आबादी।
शादी से पहले नौकरी तो वाह,
बाद मिली तो नहीं कोई परवाह।
नौकरी की उम्र सीमा काफी है,
कभी तो मिलेगी, पढ़ाई जारी है।
पढ़ते रहो बेटा बहू पोता पोती एक साथ,
जिम्मेदारी सभी की मेरी, नहीं हो अनाथ।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

पढ़ने की आजादी देता हूँ, मित्रों
जो शौक है पढ़ने की, पढ़ो पुत्रों।

डॉक्टर बनो या अभियंता, पुत्रियों;
चाहे चालक बनो, या मिस्त्रियों।
कोई बंधन नहीं, जो कला भीतर है, निखारो;
सपने को सच करके दुनिया को दिखा दो।
जो तू देखेगा, वही मेरा भी सपना है;
हासिल जो हो जाए, वही अपना है।
क्षमता तू अपनी पहचान ले, कर कोशिश।
न हो पाओ सफल, तब लेना मेरा आशीष।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

हम सभी की है अलग–अलग मति,
भेड़–बकरी की तरह नहीं छायाप्रति।
कि एक डंडे से हांक दे,
और एक कोठे में बांध दें।
राम राम हुए, न हनुमंत शंकर,
गांधी गांधी हुए, न अम्बेडकर।
चंद्रशेखर आजाद हुए, भगत सिंह भगत,
सभी स्वनाम चरितार्थ किए, इस जगत।
अतः यही कहना है,
स्वतः नाम बनना है।
पत्नी को नहीं बनाना सीता,
न पुत्र को बनाना है गणेश।
वे जिस नाम से हैं, वहीं रहे,

मैं रहूँ अपने नाम से रमेश।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

नवव्याहता को
मुँह दिखाई में
न राशि – उपहार, न कीमती सामान दूँगा,
अपने कर्त्तव्य को जानें, ऐसा सम्मान दूँगा।
प्रताड़ित न हो ससुराल में, ऐसा ज्ञान दूँगा,
जाने अधिकार को, भारतीय संविधान दूँगा।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

जब अल्प हो, तेरे पास,
न हो निराश।
उसी से कर शुरूआत,
होगा उद्यमिता का विकास।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

दिन के न रहने से,
चहुँ ओर प्रकाश नहीं होता।
सुख नहीं मिलने से,
दुख का अहसास नहीं होता।

धन न हो कहीं,
अभाव का आभास नहीं होता।
मैं न रहूँ जीवन में आपके,
सब कुछ खास नहीं होता।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

दिन भर में
जो अवसाद आप
घर लाते हो,
जिन विचारों से आप
तनाव पाते हो;
उगल दो शाम को,
अपने दोस्तों के पास।
मत रखो भीतर।
धीरे–धीरे
ये बनते हैं जहर।
अजगर की तरह
आपको निगल जाते हैं।
अजगर को उखाड़ फेंको,
उगल दो शाम को,
खास दोस्तों के पास।
वह दोस्त,
हो सकता है मैं हूँ ?

या कोई और !
वह अजगर को
बढ़ने नहीं देगा।
अवसाद को
पलने नहीं देगा।
वह मैं ही हूँ।
रोज–का–रोज
उगल दो शाम को
मेरे पास
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

जब भी हो निराश, एक आदमी सदा रखो पास।
ख्याल कुछ भी आए, लिखो डायरी में खास।।
जो आदमी दिखे चिंतित, उससे दूर न हो किंचित।
कब क्या कदम उठा ले वह, ध्यान रखें परिचित।।
जो अकेला रहना चाहे, उसके रहो हमेशा साथ।
बात करके समस्या पूछो, जगाओ आत्मविश्वास।।
जीवन अनमोल है, एक बार आता हाथ, समझाओ।
नष्ट हो जाने पर, नहीं होता पश्चाताप, बताओ।।
सुनाओ, कौन इंसान दुनिया में दुखी नहीं,
संसार में जो सुखी है, वह भी दुखी कहीं।
अंध–अपाहिजों से क्या आप अधिक खिन्न ?
ना; आप सिर्फ अपनों से हुए थोड़ा भिन्न।

कुछ दिनों में ठीक हो जाएगा, विचलित न हो।
धूप–छाँव है यह, आत्महत्या के लिए प्रेरित न हो।
क्योंकि
अभी मैं जिंदा हूँ।

■■

मर गया

माँ मर गई

माँ ने छोड़ा सौंदर्य,
पुत्र के लिए।
पुत्र ने छोड़ी माँ,
पत्नी के लिए।
पत्नी ने छोड़ा सौंदर्य,
पुत्र के लिए।
पुत्र ने छोड़ी माँ,
पत्नी के लिए।
सौंदर्य मर गया,
माँ मर गई।

माँ की दवा,
बा का चश्मा,
नहीं आया;
साल बीत गए।
भरोसा मर गया,
माँ मर गई।

नौ माह का कर्ज,
लालन–पालन का फर्ज,
भूल।
बेटा ने कहे अपशब्द,
माँ को लगा,
शूल।
माँ मर गई।

माँ ने छोड़ी ममता,
बन सास।
बहू मर गई।

बेटी बनी बहू,
सास बनी माँ।
चिंता बाप की
मर गई।

भाभी–ननन्द
बनी दोस्त।
परिवार बना
मायका।
चिंता माँ की
मर गई।

ससूर बना पिता,
सास बनी माँ।
ननंद बनी बहन,
ससुराल स्वर्ग समाँ।
बोझ बाप का
मर गया।

अब तो शादी हो गई।
बच्चे हो गए।
बच्चों को अच्छा बनाना है,
ठीक से पढ़ाना है।
हमारा हो गया।
करियर सो गया।
यह सोचते ही,
बाप मर गया।
माँ मर गई ।

स्नातक पास है,
मंजिल आसपास है।
मंजिल बहुत दूर नही,
सपना चकनाचूर नहीं।
बच्चे को स्नातक बनने में
इक्कीस साल लगेंगे,
आप करीब पहुँचकर,

पीछे क्यों हटेंगें।
जब तक जिंदा रहिए,
दोनों कर्म कीजिए।
क्या पता, भविष्य क्या लाए ?
आप या बच्चा सफलता पाए।
जिस दिन आप पूत के लिए
जीना छोड़ दिए खुद के लिए।
आप मर गए।
माँ मर गई।

■■

पिता मर गया

संतान की अच्छी शिक्षा के लिए,
नौकरी पेशा पिता
दूर किराए पर रहना स्वीकार किए।
रोज दूर की यात्रा,
धूल की बढ़ती मात्रा।
स्वास्थ्य खराब।
पिता मर गया।

बेटी बहुत पढ़ी,
नौकरी की ललक बढ़ी।
उम्र तीस से ऊपर,
नहीं मिला सही वर।
पिता मर गया।

■■

मैं मर गया

मैं जीता था, तुम्हारे (She) लिए।
तू जीती थी, किसी और के लिए।
मैं मर गया।

उसके (She) दिल को नहीं समझ सका,
चेहरे की रौनक पर ही फंसा रहा।
मैं मर गया।

हो भला तेरा, यह सोच,
परेशान रहता हूँ हर रोज।
तुम्हारी (She) जीविका के लिए,
करता नौकरी की खोज।
आपने
मुझे नहीं समझा।
मैं मर गया।

मैं जीता था, पुत्र के लिए।
पुत्र खप गया नशे में।
मैं मर गया।

किया संतान ने अलग बसेरा,
बिना समर्थन मेरा।
मैं मर गया।

मैं जीता था, पुत्री के लिए।
पुत्री घुस गई मोबाइल में।
मैं मर गया।

मैं जीता था, कुटुम्ब के लिए।
कुटुम्ब ने छल किया।
मैं मर गया।

योजना शासन की,
रीति पालन की;
अगर हो लोच।
मत सोच,
न कर विरोध।
मैं कर्मचारी,
सरकारी,
मानना लाचारी।
मैं मर गया।

सड़क पर कुछ दिव्यांग खड़े थे,
इगो में दिमाग और दिल लड़े थे,
उन्हें पार कराने में उस दिन,

मेरे कदम नहीं बढ़े थे।
मैं मर गया।

मोड़ पर एक युवक,
खून से सना पड़ा था।
लफड़े में नहीं पड़ना सोच,
मैं दूर खड़ा था।
मैं मर गया

भूख से छटपटा रहा एक गरीब,
फटा कपड़ा, भूखा मरना नसीब।
माँगा उसने पेट दिखाकर,
आँखों से आँसू गिराकर।
मैंने कहा, चल भाग।
मैं मर गया।

उसने मेरी निंदा की,
मुझे गुस्सा आया।
क्षमा मर गई।
सहनशीलता मर गई।
मैं मर गया।

नारी की करूण पुकार,
गरीबों की भूख–चित्कार,
देश रक्षा की ललकार।

नहीं सुनी मैंने।
मैं मर गया।

मेरी दुकान पर
एक आदमी आता है।
सामान से अधिक
दाम दे जाता है।
मैं कुछ नहीं बोलता।
मैं मर गया।

जब गंदा स्वार्थ मेरा,
नहीं होता है पूरा।
चिल्लाता हूँ जोर से,
बन जाता हूँ बुरा।
स्वार्थी बना।
मैं मर गया।

अपनों का हित,
उचित का अहित।
पर झूठ निंदा,
स्व झूठ विस्मृत।
स्वार्थी बना।
मैं मर गया।

वोट के खातिर नेता,
जनता को लालच देता।
रूपए करोड़ कर्ज लेता,
धर्म आड़ में गला रेता।
मैं चुपचाप देखता।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
मेरी उम्र बढ़ गई;
पढ़ना–लिखना बंद कर दिया।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
मेरी अस्थियाँ जर्जर हो गई;
अन्याय के विरोध में ललकारना
बंद कर दिया।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
मेरी आँखें बूढ़ी हो गई;
निर्बल पर अत्याचार को देख
आँखें मूंद ली।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
मैं पंगु हो गया;
चलना बंद कर दिया।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
मैं बहरा हो गया;
हेल्प–हेल्प की करूण पुकार
सुनना बंद कर दिया।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
मैं रोगग्रस्त हूँ;
जीना बंद कर दिया।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
मैं उससे नहीं लड़ सकता;
डर गया।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
वह दौड़ाकर मुझे मारेगा;
भागा।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
वह मुझसे नफरत करेगा;
मैंने भी नफरत की।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
वह (She) सूरत से भद्दी है;
उसके साफ दिल की निंदा की।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
वह खूबसूरत है;
उसके (She) बुरे दिल को दिल में बसाया।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
वह तुच्छ है, नीच है;
उसके अच्छे कार्यों को
नजर अंदाज किया।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
वह कुलीन है,
उसके कुकर्मों को भी

सराहा।
मैं मर गया।

यह मानकर कि
वह सुन्दर है, स्मार्ट है;
उसकी चरित्रहीनता को
नहीं देख पाया।
मैं मर गया।

एक साल का बच्चा
मेरी ओर देखकर
मुस्कुराया।
मैं चुप रहा।
मैं मर गया।

अपनी कॉलेज छात्राओं से
घंटों दूरभाष बातें।
बेटियों से एक मिनट।
मैं मर गया।

महिलाओं से मधुर वार्ता,
पुरूषों से कठोर।
मैं मर गया।

महिलाओं की सहायता में
हमेशा तत्पर।
पुरूषों को – रुक न थोड़ा।
मैं मर गया।

लम्बे बाल लगे
कंघी में,
बाल सँवारा
लगे गंजी में।
मैं मर गया।

जब बीमार हुआ गंभीर,
मेरे अपने हुए अधीर।
परिचित लोग थे आसपास,
रोने भी लगे अपने खास।
किसी की आती थी आवाज,
तो कोई रोता था चुपचाप।
याद आया मैं और मेरी छाप,
आँसू कोई, कोई पश्चाताप।।
शादी में आशीर्वाद,
बर्थडे में साथ।
टूर आसपास,
शोक में आलाप।
प्रत्यक्ष वार्तालाप,

सुझाव दूरभाष।
पहुँच आवास,
झोपड़ी निवास।
सहयोग सभी का
चाहे न हो खास।
मधुर वार्ता में,
हास–परिहास।।
छात्रों को मंच दिलाना,
मंच संचालन सिखाना।
गुण उजागर कराना,
साहित्यकार बनाना।
न्यूज में नाम छपाना,
हेडलाइन में भी लाना।
छात्रों के माँ बाप का
गर्व से सीना फूलाना।
गतिविधि आयोजित कर,
पूर्ण सहभागिता कराना।
ये सब
छात्र, याद कर रोने लगे,
धीरे–धीरे मुझे खोने लगे।।
जोर से छिंकना,
ठहाकों में हँसना।
ध्यान से सुनना,
गाँव का नाम पूछना।

फिर नाम पूछना,
फिर दुबारा गाँव पूछना।।
अपना बनना,
बनाना अपना।
अनजान का भी
एक बार मिलना।
फिर कभी नहीं,
मुझे भूलना।।
अनजान, अपना होने के बाद।
जाने लगे छोड़ मेरा साथ।।
इलाज में समय लम्बा लगा,
यह देख कर अचम्भा लगा;
कि जो लोग चिंता करते थे रमेश की,
बात करने लगे पड़ोस, समाज, देश की।
धीरे–धीरे हटने लगा मुझसे, उनका मन,
दूर जाने लगे रिश्ते, साथी और परिजन।
बोले, दो उसे जो खाए पिए उसका तन,
चर्चा हुंई, कितना खर्च दशकर्म आयोजन।
जीते जी
मैं मर गया।

दौरान मेरी शवयात्रा,
चर्चा सम्पत्ति बंटवारा।
मरने के बाद
मैं मर गया।

■■

वह मर गया

उसने (He) मांगा
वह भी।
लज्जा भंग।
वह मर गई।

उसने (She)
अभी 'ना' कहा।
बलात् संग।
वह मर गई।

धीरे–धीरे
भावना एकाकार की।
भरोसा जीता।
पा सर्वस्व,
धीरे–धीरे
छोड़ दिया हाथ।
वह मर गई।

प्रेमी ने न छोड़ा,
उसे विवाहेत्तर।

न बस सका,
नव–व्याहता का घर।
वह मर गई।

उसके हिस्से के कार्य को
मैंने कर दिया पूरा।
परन्तु वह रह गया,
सदा के लिए अधूरा।
उसमें वह लघु हो गया,
जीवन भर पंगु हो गया।
स्वकाम किसी पर टालो मत,
घर पर अजगर पालो मत।
कभी न आलसी बनो, न बनो ठग,
खुद के काम को करो, बनो कर्मठ।
जिसने कहा भाई सुनो–
मेरा यह काम कर दो।
समझाकर, कर्मशीलता का
मंत्र कान में भर दो।
यदि किया मैंने उसके काम का निवारण,
उसकी अकर्मण्यता का बना मैं कारण।
उसकी क्रियाशीलता मर गई,
वह मर गया।

■■

बेटा मर गया

जागती माँ की रातों को,
ममतामयी स्पर्श माथों को।
ऊँगली पकड़े उन हाथों को,
सीने से लग माँ की साँसों को।
बाप की चमकती आँखों को,
भूला दिया तूने उन यादों को।
न सूध ली, न की सेवा,
व्यर्थ, अधिकारी बेटा।
यहाँ नहीं, वहाँ ले जा,
कहकर वृद्धाश्रम भेजा।
बेटा मर गया।

एक सौतेली माँ ने
शिशु को हमेशा छाती से
चिपका कर धरा,
खुद से अलग कर
धरा पर कभी नहीं रखा।
बच्चा नहीं चला।
ममता छद्म।
पैर मर गया।

■■

पत्नी मर गई

शादी के बाद
वर को मिला आशीष दीर्घायु का,
पति जिन्दा रहा।
वधू को मिला सदा सुहागन रहो,
पति जिन्दा रहा।
पत्नी मर गई।

पति नौकरी पर,
घर आकर आराम।
पत्नी नौकरी पर,
घर आकर काम।
पत्नी मर गई।

पत्नी
कभी माँ,
कभी घरवाली।
कभी कूक,
कभी माली।
कभी मैड,
खाती गाली।
पत्नी मर गई।

■■

पति मर गया

सुहागन ने न छोड़ा,
प्रेमी।
पति मर गया।

पत्नी के कदम,
बहके हरदम।
पति मर गया।

पत्नी ने किया शक,
न जताया हक।
पति मर गया।

■■

लोग मर गए

पशु रोते हैं,
नहीं हँसते।
कुछ घरों के लोग
नहीं हँसते।
लोग मर गए।

कुछ लोग गम्भीर होते हैं,
जोर से बात नहीं करते।
साँस छोड़ने की
आवाज पर
आपको देखते।
लोग मर गए।

कुछ लोग
धीमी बात करते।
न सुन पाने पर
नहीं पूछ सकते।
लोग मर गए।

कुछ लोग
बात नहीं करते,
बात नहीं करने देते।
बात नहीं कर सकते।
लोग मर गए।

समाज में फैली असमाजिकता,
न प्रेम–सौहाद्र्य, न एकता।
जलन, असहयोग का भाव;
दिलों में भरता।
विकास की राहें न दिखता।
स्वार्थपरता।
लोग मर गए।

न नारी का सम्मान,
न बुजुर्गों का मान।
आखिर क्यों,
मर्यादा का न ध्यान।
लोग मर गए।

विलास, विसंगति,
उत्कोच, काली संपत्ति।
भ्रष्टाचार अति,
स्वेच्छाचार मति।

देश कर्ज में
लोग स्वार्थ रति।
लोग मर गए।

लोग
उपकार भूल जाते हैं,
शत्रुता याद रखते हैं।
लोग मर गए।

लोग
खिलाना और खेलाना
भूल जाते हैं,
रूलाना याद रखते हैं।
लोग मर गए।

कल जाति सिर्फ जाति थी,
धर्म सिर्फ धर्म।
आज है इसकी आड़ में,
अमानवीय कर्म।
कबीर साहब मर गए।
लोग मर गए।

उत्तरकाशी धराली
बादल फटा,

सैकड़ों लोग
लापता।
एक मिनट से भी कम,
बह गए घर होटल हम।
हमारे कर्म
या
प्रकृति धर्म ?
ऑपरेशन 'जिंदगी' से
कुछ जीवन बचे।
जो न बचे,
उनकी यादें बची;
लोग मर गए।

■■

प्रेम मर गया

निज हित त्याग,
किया हित प्रिया।
प्रिया बनी पर की,
प्रेम मर गया।

प्रेम माँ का
मिला अग्रज को।
प्रेम अनुज का
मर गया।

प्रेम भाई का
मिला इतर को।
प्रेम भाई का
मर गया।

प्रेम आत्म से
न हो सका।
प्रेम मर गया।

प्रेम आत्मा से
न हो सका।
प्रेम मर गया।

प्रेम आम से
न हो सका।
प्रेम मर गया।

प्रेम खास से।
स्वार्थ।
प्रेम मर गया।

नहीं स्वीकारा समाज
जाति–धर्म काज
प्रेमी–युगल आज
मर गए।

बहू ने देखा सास को
सास अपनी सास को
देती थी प्रताड़ना।
कुछ वर्षों बाद
बीच की सास को
मिली वही यातना।
बेटा ने देखा बाप को

बाप अपने बाप की
मृत्युशैया पूर्व
नहीं की सेवा,
नहीं नहलाया।
कुछ वर्षों बाद
वही घटना क्रम
फिर से आया।
वत्सल प्रेम मर गया।

■■

उम्मीदें मर गई

वकील ने कहा झूठ बोल,
सच का पर्दा मत खोल।
इस तरह मैं जीता हर बार,
एक बेगुनाह की हुई हार।
उम्मीदें न्याय से
मर गई।

माँ की मजदूरी का पैसा,
उड़ाया कुसंगत में बेटा।
कुछ ले डूबी गर्ल फ्रेंड ने,
शेष नशा, नए ट्रेण्ड में।
कहीं न हुआ पास,
माँ की गई आस।
उम्मीदें माँ की
मर गई।

हमने अपने मतों से आपको चुना,
फिर आपने किया हमें अनसुना।
न सड़क बनी, न मुक्तिधाम,
मिला न हर हाथ को काम।
न प्रगति, न विकास,
चहुँ ओर हम हताश।
उम्मीदें जनता की
मर गई।

पाँच साल के लिए हम चुने हैं,
जनता ने कुछ सपने बुने हैं।
कुछ नौकरी, बिना दाम दे दो,
बिना रिश्वत के काम दे दो।
उत्कृष्ट निर्माण दे दो,
निर्माण में अनुदान दे दो।
भ्रष्टाचार व्याप्त हुआ।
उम्मीदें जनता की
मर गई।

डॉक्टर ने लिखी दवाई पर्ची भर में,
जो मिली सिर्फ अस्पताल परिसर में।
न मिली छूट,
लुट–ही–लुट।
खरीदवाए बॉटल सात,
तीन चढ़े, चार बेचे स्टॉफ।
उस वापसी माल का पुनः क्रय,
हर बार डॉक्टर की कमीशन तय।
उम्मीदें मरीज की
मर गई।

दूसरे दिन, दूसरे डॉक्टर की
आई जब बारी।
फिर से खून जाँच,
एक्स–रे और सोनोग्राफी।

उपयोगी, तब भी,
बदल दी गोली, सुई सारी।
डॉक्टर का क्या,
मरीज के जेब पर पड़ा भारी।
मरे को चढ़ाया ऑक्सीजन।
उम्मीदें मरीज की
मर गई।

पर्यावरण असुरक्षित,
कार्बन अति उत्सर्जित।
सरकार समर्थित,
पेड़ के पत्ते अहरित।
ऑक्सीजन हुए कम,
मरीज की साँसें थम।
उम्मीदें मरीज की
मर गया।

जब मैं बहुत छोटा था,
माँ का वस्त्र फटा था।
घर मरम्मत को अड़ा था,
बाप कर्ज में डुबा था।
फिर भी मेरा सपना,
पूरा हुआ, नहीं टूटा था।
बड़ा हुआ मैं बाद में,
भूला, नहीं रहा याद में।

जरूरतें उनकी पूरी नहीं,
हसरतें मन में जमी रहीं।
अश्रु नैन से बहते रहे,
प्यार मुझे करते रहे।
उम्मीदें माँ–बाप की
मर गई।

हुआ मेरा एक प्यारा बच्चा,
पाता सब सामान अच्छा।
खुशी हुई न कम,
पूरी हुई हरदम।
जब हुआ वह बड़ा,
हम पर ही अकड़ा।
हमने कहा,
देखो यह वीडियो सबूत।
हमने पाला तुम्हें,
मान कर सपूत।
कहा उसने,
पाल कर नहीं किया अहसान।
सभी पालते हैं,
अपनी – अपनी संतान।
उम्मीदें मेरी
मर गई।

■■

लगन मर गई

एक परिचित साजिश वाला,
रोज फेरता ढोंग की माला।
देखा न गया उससे,
आगे रहना मेरा सबसे।
मेरी वजह से हुआ वह खाली,
गयी सब उसकी कमाई काली।
मन में नफरत थी, आका की मिली ईनायत,
लगा कर झूठा आरोप, कर दी शिकायत।
लगन मेरी
मर गई।

पढ़ाई–लिखाई मेरी ठीक थी,
शरीर संरचना खेल में फिट थी।
हुई मुझसे अनजान त्रुटि,
शिक्षक ने तानी भृकुटि।
सीधा धमकाया,
नहीं समझाया,
शिक्षक का दायित्व
नहीं निभाया।
दे दी टीसी।
लगन मेरी
मर गई।

दिन–रात पढ़ता था,
काम भी करता था।
नौकरी का मूड हुआ,
तैयारी में जुट गया।
घर में मृत्यु।
लगन मेरी
मर गई।

पूरे उत्साह के साथ,
पढ़ता खूब पूरी रात।
लोगों से रहा नहीं गया,
मेरा बढ़ना सहा नहीं गया।
सभी ने कहा –
नहीं निकाल पाओगे बी एससी,
छोड़ दो आईसीएस, पीएससी।
हुआ हतोत्साहित।
लगन मेरी
मर गई।

■■

समय गया

कल करूँगा।
समय गया।
मैं मर गया।

कॉल आया,
बिजी था।
नहीं उठाया।
समय गया।
वह मर गया।

बच्चा
पानी में डूब रहा था।
तुरंत पानी में नहीं कुदा।
समय गया।
वह मर गया।

आग लगी थी।
गए कुँआ खोदने।
समय गया।
वे मर गए।

परीक्षा थी।
दो मिनट की देरी।
समय गया।
मैं मर गया।

हार्ट अटैक।
इंतजार एम्बूलेंस का।
समय गया।
वह मर गया।

बुरे ख्याल मन में
किसी से बात नहीं।
समय गया।
आत्महत्या।
मैं मर गया।

परीक्षा परिणाम
आने वाला था।
किसी ने न समझाया।
समय गया।
आत्महत्या।
मैं मर गया।

ब्लैकमेलिंग,
किसी को बताया नहीं।
समाधान आया नहीं।
समय गया।
आत्महत्या।
मैं मर गया।

असीमित प्यार
इजहार नहीं।
उसकी शादी हो गई।
समय गया।
मैं मर गया।

■■

डर मर गया

धमकी,
यातना,
समस्या,
कष्ट;
मौत से बड़ी तो नहीं!
मृत्यु अटल, जाना।
डर मर गया।

न्याय,
नीति,
कर्त्तव्य,
अधिकार;
पथ पर चला।
डर मर गया।

सहयोग,
सेवा,
सहानुभूति,
साथ;
लोगों का दिल जीता।
डर मर गया।

■■

गुस्सा किया

नीति हो, अनीति हो;
स्वार्थ हो, परमार्थ हो;
किया न गुस्से को काबू।
एफ आई आर।
करियर मर गया।

गुस्सा तब जायज,
जब हूँ मैं लायक।
सुधार
अपनी शक्ति से।
भ्रष्ट तंत्र मर गया।

कमजोर पर
किया गुस्सा।
मर्दानगी नहीं।
मैं मर गया।

बच्चे ने काम बिगाड़ा,
न समझाया।
किया गुस्सा, धमकाया।
मैं मर गया।

■■

घमण्ड मर गया

शारीरिक रचना आकर्षक,
पैसे का सही आवक,
आज का युवक।
मत कर घमण्ड,
दो पहिया चालक।
गति 100 से पार,
दुर्घटना घातक।
जान चली गई।
घमण्ड मर गया।

किशोरी
खूबसूरत।
चेहरे पर लीपा–पोती,
बहुत।
कभी इसे, कभी उसे
घुमाया,
एटीट्यूड अपने भीतर
खूब लाया।
पहले लुटा, पीछे लूट गई।
सारी सुन्दरता छूट गई।
घमण्ड मर गया।

पैसे सर चढ़ कर बोला,
साजिश का पंख खोला।
रिश्ते भी किया पोला,
बदला चोला।
दोगला।
हुआ पैरालाइस।
घमण्ड मर गया।

कलाकार,
संगीतकार,
ज्ञान का भण्डार।
पद का बड़ा आकार,
विघ्न नाना प्रकार।
हुआ अस्वस्थ।
घमण्ड मर गया।

■■

कवि मर गया

कवि ने छोड़ा छन्द विधान,
लगे तुक बेजान।
आ गई अकविता।
छन्द मर गया।

एक गद्य वाक्य को
चार पंक्तियों में
बीचों–बीच लिखता।
क्या यही है
आधुनिक युगीन
हिन्दी कविता ?
न तुक, न कर्णप्रियता,
न शब्द सुकुमारिता।
न कल–कल करती,
धवल धारा सरिता।
आज का कवि,
अलंकार रीता।
कवि मर गया।

आचार्य छोड़े रीति,
भूल सब अलंकार।
गद्य बना पद्य।
पद्य मर गया।

लेखक ने थामी चापलूसी,
अनीति बढ़ी।
लेखनी मर गई।

कवयित्री ने लिखा श्रृंगार,
देश–प्रेम बेकार।
युवा–पीढ़ी मर गई।

आंज का मंचीय कवि
जिस राज्य में जाता है।
वहीं के शासक का
गुण गाता है।
कवि मर गया।

सच लिखने से
डरता है कवि,
परिवार नौकरी
करता है कहीं।
हरिशंकर परसाई का
परिवार था नहीं।

लिखता था
सच–सही।
आज का कवि,
न शशि, न रवि
लिखे बात वही
जिसे सत्ता ने कही।
कवि मर गया।

कुत्सित राजनीति,
जाति की रणनीति।
पक्षपात रीति,
दलगत विकृति।
जो ये न लिखे,
कवि उसे न कहें।
कवि मर गया।

भावना को देकर रंग,
विचारों को देकर पंख।
लेखनी को लेकर संग,
छू ले गगन कवि मन।
रख मत ज्वाला अंदर,
कर दे जगत में गदर।
बना समाज को सुंदर,
छू ले गगन कवि मन।

जिस दिन ऐसा न हुआ,
कवि मर गया।

क्लिष्ट भाषा से नहीं बनता कोई कवि,
सीधा, सादा, किरण देता है जैसे रवि।
उदाहरण के तौर पर डालिए एक नजर,
महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पर।
लिखा उसने, सहज सुगम भाषा सरल,
प्रसिद्ध कविता – वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर।
क्लिष्ट भाषा से आ तो जाती है महानता,
पर नहीं हो सकती अर्थ की ग्रहणशीलता।
साहित्य से दूर हो जाती है आम जनता।
कविता ऐसी हो कि राग जगा दे,
दिलों में धधकती आग लगा दे।
बंजर को हरियाली बाग बना दे।
लोगों के दिलों पर राज करा दे,
भाव ऐसा, आ जाए होश,
सोए हुए में जगाए जोश।
देखना न पड़े शब्दकोश,
अर्थ समझे आम लोग।
शब्द क्लिष्ट लगा,
आम पाठक भगा।
कवि मर गया।

पुष्प – रंग,
शिला उत्तंग।
नदी तंग,
जल – तरंग।
प्रकृति संग,
धरा उमंग।
कवि ने लिखकर कुछ उखाड़ा नहीं,
पशुता को जड़ से पछाड़ा नहीं।
प्रकृति तो है सुंदर,
इसे क्या रचना ?
भ्रष्टाचार मिटा कर,
बनो देश का गहना।
समाज से सरोकार नहीं,
कवि मर गया।

■■

किसान मर गया

किसान ने छोड़ी कृषि, अकाल में।
हो गए गार्ड, पॉवर प्लांट में।
फसल मर गई।

किसान ने छोड़े गाय–बैल,
आ गए कुत्ते घर में।
गौरी के लिए गोबर नहीं।
संस्कृति मर गई।

किसान ने छोड़ी गाय,
दूध नहीं।
मानव–शिशु मर गया।

किसान डूबा कर्ज में,
अतिवृष्टि, अनावृष्टि।
फसल लहूलुहान,
किसान मर गया।

■■

न्याय मर गया

दुकानों में वस्तु के मुद्रित दर,
बराबर उसके कीमत देकर।
मेडिकल में कभी दस प्रतिशत,
कभी पाँच की छूट लेकर।
पर तहसील में सबसे हटकर,
अधिक दाम में स्टांप पेपर।
रिश्वत में उलझा राही
बीच में अटक जाता है।
ईमानदार व्यक्ति भी
रास्ता भटक जाता है।
न्यायकर्ता का कर्मचारी
रिश्वत गटक जाता है।
न्याय मर गया।

■■

मरने के बाद

मेरे मरने के बाद भी;
मेरी आँखें
सुकून की नींद
सो पाएंगी ?
मेरे मरने के बाद;
निर्दोष निर्भया का,
पीड़ित प्रियंका का,
सवाल नहीं होगा;
तब दरिंदे
ठहाका मारेंगे,
अस्मत तार–तार करेंगे;
क्या यह अच्छा होगा
कि मेरी आँखों की मृत्यु हो,
नहीं !
मेरे मरने के बाद भी
मेरी आँखें जिंदा रहे,
अश्रु पलक से टपकाते हुए
या शोले बन अंगारे बरसाते हुए।

मेरे मरने के बाद भी;
कोई देश
सीमा पर तनावमुक्त रहेगा ?
नहीं !
पड़ोसी देशों की फितरत
क्या जवानों को जीने देगी ?
जवानों के माँ–बाप
चैन से सो पाएंगे ?
साम्प्रदायिकता की आग
राख हो पाएगी ?
मेरे मरने के बाद,
हे मेरी अस्थियाँ !
कभी विसर्जित नहीं होना,
ढाल बनकर
जवानों की रक्षा करना,
कभी न मरना।

मेरे मरने के बाद भी;
किसी धर्म की लकीरें
चाहे खींच जाए,
चाहे मिटकर
दूसरे की, बढ़ जाए;
पर, मैं देख न सकूंगा,
अत्यधिक धर्मी होना,

धर्म को बचाकर
धार्मिक दंगे करना,
धार्मिक कट्टरता से
धर्म रक्तिम होना;
मेरे मरने के बाद,
हे मौत!
मुझे धार्मिक नहीं,
अ–धर्मी,
धर्म निरपेक्ष,
धर्म रिक्तिम बनाना।

मेरे मरने के बाद भी;
मैं बोलता रहूँगा।
डायरी
मुझसे बात करेगी।
डायरी के फड़फडाते पन्नों में
मैं समा जाऊँगा।
एक–एक शब्द
मेरे विचारों को
पंख देने को आतुर,
वायु में घुलकर
कोई एक,
मेरे कानों में
फुसफुसाएगा–

तुम जिंदा हो,
मैं मुस्कुरा उठूँगा।
मेरे मरने के बाद भी
मैं जिंदा रहूँगा।

मेरे मरने के बाद भी;
मैं विस्मृत होते जाता हूँ।
मेरा चलना
लोगों को याद नहीं रहा।
बोलना
कर्ण ओझल हो रहा।
प्रत्यक्ष छवि
धुंधली–सी;
शनैः शनैः
पूर्णता के करीब।
मेरे मरने के बाद,
जिंदा हो रहा हूँ,
स्याही में,
पन्नों पर।
ख्यालों में
बिल्कुल नहीं।

मेरे मरने के बाद भी;
मौत ने
मुझे एक बार फिर

मात दे दी;
जब
एक बेटी की कमर
तोड़ दी गई,
शिशु
अनाथ हो गया,
पिता की लाठी
टूट गई,
माँ की ममता
मायूस हो गई।
मेरे मरने के बाद,
जिंदगी की आश
मौत के पास हो गई।

मेरे मरने के बाद भी;
मैं जिंदा हूँ,
चैन की साँस
ले रहा हूँ;
प्रसन्नचित्त हूँ।
उसने (पत्नी)
मेरे माथे की लकीर,
कंधों का बोझ,
मेरा हर पल,

खुशियों में मेरा रोना,
दुखों में हँसना,
सब कुछ,
ले लिया।
मेरी सहचरी, मेरी दोस्त,
मेरी प्रेयसी, सच्चा प्रेम
वही तो है;
सिर्फ वही।

मेरे मरने के बाद भी;
मैं जिंदा हूँ,
स्वस्थ मन से,
स्वस्थ तन से।
जब
मेरे पीछे
मेरे निवास में
किलकारियाँ–ही–किलकारियाँ,
रौशनी–ही–रौशनी।
आँखों में
चमक–ही–चमक,
चेहरे पर
मुस्कान–ही–मुस्कान।
मैं इन रूपों में
खिलखिला उठता हूँ,

शौर्य के साथ,
मैं जिंदा हूँ।

मेरे मरने के बाद भी;
रानी बिटिया के
नन्हें कदम,
छोटी–छोटी कोमल ऊँगलियाँ,
सहारे को न तरसे;
पापा–परी की
जुगनू–सी आँखें
खुशियों से चमके।
तब
मेरे मरने के बाद भी
मैं जिंदा हूँ,
मैं पापा हूँ,
एक बार कह दो, बेटी !
''पापा'',
मेरे ''पापा''।

मेरे मरने के बाद भी;
मेरी लाड़ली !
तुम किताबों में
खोए रहना,
सपनों को साकार करना।

न होना विचलित
अपनी मंजिल से;
न खोना कभी
पापा की यादों में,
न रोना कभी
पापा की यादों में।
तब
मैं तेरे पास
जिंदा ही रहूँगा;
मेरे मरने के बाद भी
जिंदा रहूँगा।

दान मत करना,
मेरी आँख को।
न हृदय को,
न दिल, दिमाग को।
बल्कि
दान कर देना
सर्वांग को।
जिले के सरकारी अस्पताल में
चिकित्सा के छात्र
मेरे कंकाल को
शुल्क रहित परीक्षण करें।
मैं नहीं चाहता

जीवन–मरण के बीच
मैं फिर से मरूँ।
दान से
अमर हो जाऊँगा।
मेरे मरने के बाद भी
जिंदा रहूँगा,
छात्रों के बीच।

मरने के बाद
धीरे–धीरे
मैं
मर रहा हूँ।
साहूकार से पूछा –
धीरे–धीरे मरने की दवा
मुझे दे दो।
उसने कहा –
मेरे पास
सिर्फ
एक बार में
मरने की दवा है।
धीरे–धीरे
की दवा
अपने परिवार,
परिचित के पास है,

जो धीरे–धीरे
भूलाते हैं।
वहाँ
धीरे–धीरे
मरोगे।
लेकिन मरोगे
अवश्य।
परन्तु,
मैं
नहीं मर सकता।
मैं समा गया हूँ,
किताबों में मेरी।
जो भी खोलेगा
पन्ने
जिंदा मिलूँगा,
पूरे आत्मविश्वास के साथ,
युवा रूप में,
ठहाका लगाते हुए,
हँसी–गुदगुदी करते हुए,
किसी को दवाई खिलाते हुए,
किसी को घर पहुँचाते हुए,
किसी को अस्पताल,
किसी को किताब देते हुए,
उपहार देते हुए,

हैप्पी बथडे कहते हुए,
मृत्यु पर शोक जताते हुए,
अवसाद से निकालते हुए,
सुझाव देते हुए,
दूरभाष से चर्चा करते हुए।
मरने के बाद भी
मैं जिंदा मिलूँगा।
मैं जिंदा रहूँगा।

■■